नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

विकसित भारत का रोड मैप

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को भारत सरकार के सचिवों के साथ हुई उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक में प्रशासन को एक स्पष्ट संदेश दिया है कि शासन जटिल नियमों और प्रक्रियाओं का पर्याय नहीं, बल्कि नागरिकों के जीवन और कारोबार को सरल बनाने का माध्यम होना चाहिए. उन्होंने स्पष्ट कहा कि गवर्नेंस ऐसी नहीं होनी चाहिए जो नियमों के बोझ तले दब जाए, बल्कि उसका उद्देश्य आम नागरिक और उद्योग जगत के लिए सुविधाजनक व्यवस्था तैयार करना होना चाहिए. यह सोच विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण है.

आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है. ऐसे समय में यदि सरकारी प्रक्रियाएं अनावश्यक रूप से लंबी, जटिल और समय लेने वाली रहेंगी, तो निवेश, नवाचार और उद्यमिता की गति प्रभावित होगी. पिछले एक दशक में केंद्र सरकार ने लाइसेंस, अनुमतियों और अनुपालन संबंधी अनेक नियमों को समाप्त या सरल बनाया है. इसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आए हैं.भारत की 'ईज ऑफ डूइंग बिजनेस' की स्थिति में सुधार हुआ है, स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा मिला है और डिजिटल गवर्नेंस ने सरकारी सेवाओं तक आम लोगों की पहुंच आसान बनाई है.

प्रधानमंत्री ने बैठक में सचिवों से योजनाओं के प्रभाव का आकलन केवल फाइलों या आंकड़ों के आधार पर नहीं, बल्कि आम लोगों के जीवन में आए वास्तविक बदलाव के आधार पर करने का आग्रह किया.यह प्रशासनिक सोच में एक आवश्यक परिवर्तन है. किसी भी सरकारी योजना की सफलता उसकी घोषणा से नहीं, बल्कि अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने वाले लाभ से तय होती है. यदि योजनाओं का प्रभाव नागरिक महसूस नहीं कर रहे हैं, तो उनमें सुधार की आवश्यकता है. बैठक में सचिवों ने आगामी रणनीतियों का भी खाका प्रस्तुत किया. इससे यह स्पष्ट होता है कि सरकार केवल वर्तमान उपलब्धियों पर संतुष्ट नहीं है, बल्कि भविष्य की चुनौतियों के लिए भी तैयारी कर रही है. कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल सेवाओं, डेटा आधारित निर्णय प्रणाली और विभागों के बीच बेहतर समन्वय आने वाले वर्षों में प्रशासन की नई पहचान बन सकते हैं. हालांकि, तकनीक तभी प्रभावी होगी जब उसके साथ जवाबदेही, पारदर्शिता और संवेदनशीलता भी जुड़ी रहे.

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में सुशासन का अर्थ केवल नियम बनाना नहीं, बल्कि समयानुकूल सुधार करना भी है. कई ऐसे कानून और प्रक्रियाएं आज भी लागू हैं जो दशकों पहले की परिस्थितियों के अनुरूप बनाई गई थीं. बदलते आर्थिक और सामाजिक परिवेश में उनकी समीक्षा आवश्यक है. अनावश्यक नियम भ्रष्टाचार, देरी और नागरिकों की परेशानियों को जन्म देते हैं. इसलिए समय-समय पर नियमों का सरलीकरण और प्रशासनिक सुधार लोकतांत्रिक शासन की अनिवार्य आवश्यकता है.

विकसित भारत 2047 का लक्ष्य केवल आर्थिक विकास से पूरा नहीं होगा. इसके लिए ऐसी शासन व्यवस्था चाहिए जो पारदर्शी, उत्तरदायी, तकनीक-सक्षम और नागरिक केंद्रित हो. प्रधानमंत्री का यह संदेश केवल नौकरशाही के लिए निर्देश नहीं, बल्कि प्रशासनिक संस्कृति में परिवर्तन का आह्वान है. यदि मंत्रालय और विभाग परिणाम आधारित कार्यशैली अपनाते हुए नागरिक सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे, तो शासन पर जनता का विश्वास और मजबूत होगा. यही विश्वास विकसित, आत्मनिर्भर और सक्षम भारत की सबसे मजबूत नींव सिद्ध होगा.

मानवता की साझा धरोहर है ज्ञान

डॉ. दिलीप सिंह
आईईएस

> भारत अत्यधिक विविधता वाला देश है, जहाँ अनेक क्षेत्र, संस्कृतियाँ और आस्थाएँ मौजूद हैं. यहाँ कोई एक समान विश्वास प्रणाली नहीं है जो पूरे समाज को परिभाषित करे. ऐतिहासिक रूप से, भारतीय समाज जन्म और सामाजिक स्थिति के आधार पर भी विभाजित रहा है. इसी प्रकार, अंतर-धार्मिक संबंधों में भी कभी-कभी श्रेष्ठता और हीनता की धारणाएँ उभरती हैं, जो प्राय: अनुयायियों की संख्या या सामाजिक प्रभुत्व से प्रभावित होती हैं. यह मानसिकता मूलत: असामाजिक है और विशेषकर शैक्षणिक संस्थानों में संघर्ष और विवाद को जन्म दे सकती है. जब एक धर्म को दूसरे से श्रेष्ठ माना जाता है और फिर उसी क्रम में अन्य को, तो यह एक ऐसी श्रेणीबद्धता उत्पन्न करता है जो एकता के बजाय विभाजन को बढ़ावा देती है. विद्यालय और विश्वविद्यालय ऐसे स्थान हैं जहाँ विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थी एक साथ आते हैं. संवैधानिक सिद्धांतों के अनुसार, किसी भी छात्र को जाति, पंथ, नस्ल, धर्म, क्षेत्र या जन्मस्थान के आधार पर प्रवेश से वंचित नहीं किया जा सकता.

या ज्ञान किसी विशेष समूह, क्षेत्र या धर्म का होता है? इसका उत्तर देखने में हाँ लग सकता है, लेकिन मूलत: यह नहीं होना चाहिए. यह हाँ इसलिए प्रतीत होता है क्योंकि ऐतिहासिक और सामाजिक रूप से ज्ञान तक पहुँच अक्सर कुछ विशेष समूहों तक सीमित रही है, जबकि अन्य को धर्म, क्षेत्र, जाति या लिंग के आधार पर इससे वंचित किया गया. ऐसा बहिष्कार अनिवार्य रूप से ज्ञान-सम्पन्न और ज्ञान-वंचित के बीच एक खाई पैदा करता है. परंतु सिद्धांतत: ज्ञान सार्वभौमिक है. यह न तो धर्म से बंधा है, न भूगोल से और न ही राजनीतिक सीमाओं से. ज्ञान मानवता की साझा धरोहर है, जिसका उद्देश्य समाज के सामूहिक उत्थान और कल्याण के लिए है.

इसके साथ ही, यह भी सत्य है कि नैतिकता और मूल्य व्यक्तिगत और सामाजिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं. लगभग सभी धर्म प्रेम, करुणा, मानवता, न्याय और पारस्परिक सम्मान जैसे सार्वभौमिक मूल्यों का समर्थन करते हैं, और यही मूल्य संविधान की प्रस्तावना में भी निहित हैं, जो भारतीय ज्ञान प्रणाली के लिए सर्वोच्च मार्गदर्शक है. भारत की बौद्धिक परंपराओं के महत्व को समझते हुए, भारत सरकार ने अक्टूबर 2020 में शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय ज्ञान प्रणाली (आइकेएस) प्रभाग की स्थापना की. इस प्रभाग का आदर्श वाक्य है- आइए, हम उस ज्ञान की ओर अग्रसर हों जो सभी के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करे. यहाँ सभी शब्द स्वाभाविक रूप से समावेशिता का संकेत देता है—अर्थात हर धर्म, संस्कृति और दर्शन के लोगों को समाहित करना. किंतु वर्तमान में आइकेएस मंच पर उपलब्ध पाठ्यक्रमों पर दृष्टि डालने से कुछ चिंताएँ सामने आती हैं. www.iksindia.org पोर्टल के अनुसार, अनेक पाठ्यक्रम आयुर्वेद, योगसूत्र, भगवद्गीता, वैष्णव वेदांत, पाणिनि व्याकरण, पारंपरिक खगोलशास्त्र, श्रीमद्भागवतम और सांख्य दर्शन जैसे विषयों पर केंद्रित हैं. इसके अतिरिक्त, आइकेएस प्रभाग ने कई वैदिक और संस्कृत विश्वविद्यालयों तथा सिद्धांत और सरयू फाउंडेशन जैसे संगठनों के साथ समझौता ज्ञापन भी किए हैं.

निस्संदेह, ये विषय भारत की बौद्धिक धरोहर के महत्वपूर्ण अंग हैं, लेकिन वर्तमान संरचना मुख्यत: एक विशेष धार्मिक या दार्शनिक धारा से जुड़े ज्ञान पर अधिक बल देती प्रतीत होती है. इससे एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है- यदि आइकेएस का उद्देश्य सभी का कल्याण है, तो क्या इसके ढाँचे में अन्य समुदायों—जैसे सिख, जैन, बौद्ध, मुस्लिम, ईसाई आदि—की ज्ञान परंपराओं और योगदानों को भी समान रूप से स्थान नहीं मिलना चाहिए, जिन्होंने भारत की बौद्धिक और सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध किया है? सभी के कल्याण की अवधारणा को वास्तविक रूप से साकार करने के लिए आवश्यक है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली एक समावेशी मंच के रूप में विकसित हो, जो भारत की विविध ज्ञान परंपराओं का प्रतिनिधित्व करे, न कि किसी एक धार्मिक या दार्शनिक दृष्टिकोण तक सीमित दिखाई दे. तभी यह ज्ञान की सार्वभौमिक भावना को सही अर्थों में प्रतिबिंबित कर सकेगी और कोई भी समुदाय स्वयं को इससे बाहर महसूस नहीं करेगा.

भारत का संविधान, अनुच्छेद 28 के अंतर्गत, उन शैक्षणिक संस्थानों में धार्मिक शिक्षा या पूजा-पाठ के आयोजन पर प्रतिबंध लगाता है, जो पूर्णत: राज्य के धन से संचालित होते हैं. यहाँ तक कि आंशिक रूप से सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में भी किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा या पूजा में भाग लेना अनिवार्य नहीं किया जा सकता. संवैधानिक ढाँचा स्पष्ट करता है कि किसी भी व्यक्ति को उसकी इच्छा के विरुद्ध धार्मिक शिक्षा या उपासना में भाग लेने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता. चयन की स्वतंत्रता और अंत:करण की स्वतंत्रता प्रत्येक नागरिक के मौलिक अधिकार हैं.सरकारी धन मूलत: उन करों से आता है, जो भारत के सभी नागरिकों से, उनके धर्म, जाति या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, एकत्र किए जाते हैं.

ग्वालियर चंबल डायरी

कार्यकारिणी जारी होते ही सतह पर आ गई कांग्रेस की कलह

हरीश दुबे

ग्वालियर कांग्रेस में महाभारत मचा है. यूं तो पार्टी स्थानीय स्तर पर तमाम गुटों एवं उपगुटों में विभाजित है लेकिन अंदरूनी कलह को छिपाने के लिए छत्रप एकजुटता का दिखावा करते रहे हैं. इस छद्म एकजुटता की पोल ग्वालियर शहर जिला कांग्रेस कमेटी की बहुप्रतीक्षित कार्यकारिणी के घोषित होते ही खुल गई. इधर सूची भोपाल से ग्वालियर आई और इसी के साथ पार्टी में इस्तीफों की झड़ी लग गई. कार्यकारिणी में जिन्हें मनवांछित वजन नहीं मिला या जो हाशिए पर खिसका दिए गए, उन्होंने स्थानीय नेतृत्व के खिलाफ मोर्चा खोल दिया. इस्तीफा देने वालों में लतीफ खान मल्लू, थाटीपुर के ऊदल सिंह और प्रतीक जैन जैसे कांग्रेस के नामचीन चेहरे शुमार थे. मल्लू और ऊदल तत्कालीन अध्यक्षों की टीम में संगठन प्रभारी, उपाध्यक्ष और महासचिव जैसे बड़े ओहदों को संभाल चुके थे लेकिन अब मौजूदा अध्यक्ष सुरेन्द्र यादव की टीम में डिमोशन कर इन्हें सेक्रेट्री बना दिया. सूची जारी होते ही इन्होंने जीतू पटवारी को अपने इस्तीफे भेज दिए. प्रतीक जैन को हालांकि जनरल सेक्रेट्री बनाया गया लेकिन वे भी दो लाइन का इस्तीफा देकर जिलाध्यक्ष की टीम से रुखसत हो लिए.

इससे पहले कि और पदाधिकारी इस्तीफा देते, विधायक सतीश सिकरवार और बालेंदु शुक्ल की सलाह पर जीतू पटवारी ने कार्यकारिणी को होल्ड पर ले लिया. डिमोशन होने वालों में पूर्व विधायक प्रवीण पाठक के करीबी पिंकी पंडित भी शामिल थे लेकिन उन्होंने इस्तीफा देने के बजाए पाठक से मिलकर अपनी नाराजगी जताई. सचिव बनाए गए पप्पू श्रीवास भी कोपभवन में हैं. बहरहाल, संतुलित और सर्वमान्य कार्यकारिणी बनाने में नाकामी के बाद जिलाध्यक्ष सुरेन्द्र यादव मुश्किल से घिर गए हैं. अब तक दबे छिपे मुहिम चलाने वाले गुट खुलकर ताल ठोक रहे हैं. पार्टी में यह स्थिति तब बनी है जब पार्टी को कुछ महीनों बाद ही निकाय चुनाव के समर में जाना है. बहरहाल, जिलाध्यक्ष ने यह कहकर पल्ला झाड़ लिया है कि सूची तैयार करने में उनकी अकेले भूमिका नहीं है, क्योंकि कार्यकारिणी बनाने जैसे निर्णय सभी वरिष्ठ नेताओं के राय मशविरे से होते हैं. वे यह भी कह रहे हैं कि ग्वालियर से भोपाल तक पार्टी पूरी तरह एकजुट है.

जीतने के लिए कुछ भी करेंगे, हाउसों के बीच दुरभि संधियाँ...

मप्र चेंबर ऑफ कॉमर्स एण्ड इंडस्ट्रीज के चुनावों का रोमांच अब शबाब पर पहुंचता जा रहा है. सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण के साथ रोचक मुकाबला अध्यक्ष पद पर हो रहा है. व्हाइट हाउस के प्रत्याशी पारस जैन और टिकट न मिलने पर इसी हाउस से बगावत कर निर्दलीय ताल ठोकने वाले डॉ. प्रवीण अग्रवाल ने चुनाव जीतने के लिए पूरा दम खम लगा दिया है. क्रिएटिव हाउस ने बाकी ओहदों के लिए तो प्रत्याशी मैदान में उतार दिए लेकिन सोची समझी रणनीति के तहत अध्यक्ष पद पर असमंजश की स्थिति बरकरार रखते हुए प्रत्याशी खड़ा नहीं किया. तो क्या क्रिएटिव हाउस डॉ. प्रवीण अग्रवाल को समर्थन दे रहा है? इस सवाल का जवाब इतना आसान नहीं है. बाजार में खबर है कि प्रवीण को शिकस्त देने के लिए व्हाइट और क्रिएटिव ने गुप्त गठबंधन कर लिया.

दरअसल, पिछली दो बार के चुनाव में प्रवीण ने क्रिएटिव के दो मजबूत स्तंभों को हराया था. इस हार को हाउसों की प्रतिद्वंदता के बजाए निजी रंजिश मानते हुए क्रिएटिव के चुनाव प्रबंधकों ने प्रवीण को हराने के लिए व्हाइट हाउस से हाथ मिला लिया है.

कांग्रेस में एक और बड़े पाला बदल की तैयारी...

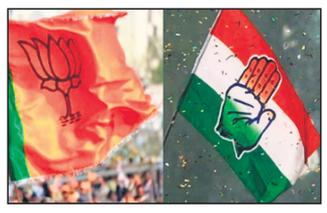

एक ओर उपचुनाव से पहले दतिया में नरोत्तम मिश्रा बड़े स्तर पर कांग्रेस में तोड़फोड़ करने में जुटे हैं वहीं ग्वालियर में भी एक बार फिर से बड़े दलबदल की पटकथा लिख ली गई है. राजनीतिक कयास लगाए जा रहे हैं कि कुछेक दिन में कांग्रेस के असंतुष्ट घटक के कई छोटे बड़े वेहरे सिंधिया और सीएम के समक्ष पंजे को छिटककर भगवा रंग में रंगेंगे. यह सच है कि अंचल में कांग्रेस इस वक्त सबसे मुश्किल दौर से गुजर रही है. सत्ता दल की वीथिकाओं में दावा तो यहां तक किया जा रहा है कि कांग्रेस के कुछेक विधायक भी निष्ठा परिवर्तन कर सकते हैं लेकिन रामनिवास रावत के एपीसोड के बाद इसकी गुंजाइश कम ही है. विधायक मिशन 28 से पहले उपचुनाव की रिस्क मोल लेने के मूड में नहीं हैं. इतना तय है कि विधायक न सही, पदाधिकारियों और पुराने कार्यकर्ताओं का ही सही, निकाय चुनाव से पहले पालाबदल का बड़ा खेला होना पक्का मानिए.

मनरेगा खत्म, 'जी राम जी' योजना लागू

समूचे देश में मनरेगा का स्थान अब विकसित भारत रोजगार गारंटी व उपजीविका निगम (ग्रामीण) अधिनियम (वीबी-जी राम जी कानून) ने ले लिया है. 1 जुलाई से लागू इस नई योजना में ग्रामीण परिवारों के जो वयस्क सदस्य स्वेच्छा से अकुशल शारीरिक परिश्रम करने को तैयार हैं, उन्हें प्रत्येक आर्थिक वर्ष में 125 दिनों के वेतन की गारंटी दी जाएगी जबकि इसके पहले मनरेगा में सिर्फ 100 दिन रोजगार का प्रावधान था. इच्छुक लोगों को ग्रामपंचायत में आवेदन देने के बाद 15 दिनों में काम दिया जाना अनिवार्य रहेगा. ऐसा नहीं होने पर उन्हें बेरोजगारी भत्ता दिया जाएगा. 'जी राम जी' में मजदूरी या पारिश्रमिक का भुगतान समय पर और पारदर्शक पद्धति से किया जाएगा. बैंक खाते या डाकघर के खाते में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) के माध्यम से रकम जमा कर दी जाएगी. मजदूरी साप्ताहिक आधार पर या मस्टर रोल बंद हो जाने पर 15 दिनों के भीतर दी जाएगी. ऐसा करना बंधनकारी रहेगा. यदि भुगतान नहीं हुआ तो श्रमिकों को कानून के मुताबिक नुकसानभरपाई पाने का हक रहेगा. सरकार ने 'जी राम जी' कानून को प्रभावी रूप से लागू करने के उद्देश्य से 2026-27 के लिए 95,692.31 करोड़ रुपये का आर्थिक प्रावधान किया है. किसी ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम के लिए यह अब तक जारी की गई सबसे बड़ी रकम है. 'जी राम जी' योजना लागू होने पर मनरेगा के जो पुराने काम चल रहे हैं उन्हें नई योजना में समायोजित कर लिया जाएगा. ग्रामीण श्रमिकों को तत्परता से काम उपलब्ध कराने तथा उसका पारिश्रमिक तत्काल देने को केंद्र सरकार प्राथमिकता देगी. इसके पहले देश में कांग्रेस नेतृत्व की यूपीए सरकार ने मनरेगा योजना चलाई थी, जिस पर 2,13,220 करोड़ रुपये खर्च किए गए थे. बीजेपी सरकार ने अपने 12 वर्षों के कार्यकाल में इस योजना पर 8,53,810 करोड़ रुपये खर्च किए थे. ग्रामीण रोजगार को अधिक मजबूत व सक्षम बनाने के लिए 'जी राम जी' योजना लागू की गई है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

बातचीत में जमा ना खर्चा हो जाए मंदिर पर चर्चा

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, इन दिनों मंदिर पर जोर-शोर से चर्चा जारी है. चंदा चोरी को लेकर हर बंदा चिंतित है कि किसके गले में फंदा पड़ेगा. आपको भी मंदिर की महत्ता पर अपनी राय देनी चाहिए.'

हमने कहा, 'रामायण काल में घर को मंदिर कहा जाता था. संत तुलसीदास लिखित रामचरित मानस में लिखा है- गयऊ दशानन मंदिर माही, अति विचित्र कही जात सो नाहीं! इसका आशय है कि हनुमानजी सीता की खोज के लिए रावण के महल या निवास में गए जो अत्यंत भव्य और विचित्र था. जब हनुमानजी ने लंका दहन किया तो कहा गया- देह विशाल परम हरुआई, मंदिर ते मंदिर चढ़ धाई. हनुमानजी दौड़कर एक से दूसरे मकान पर कूदते चले गए और अपनी पूंछ में लगाई गई आग से विभीषण का घर छोड़कर सारी लंका जला दी.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, अमिताभबच्चन के पिता व हिंदी के मशहूर कवि डॉ. हरिवंश राय बच्चन ने अपनी कृति 'मधुशाला' में लिखा था- मंदिर-मस्जिद बैर कराते,

मेल कराती मधुशाला!'

हमने कहा, 'फिल्मी गीतकार भी मंदिर के प्रति बहुत गहरी आस्था रखते हैं. मंदिर के एक खास उपयोग का उल्लेख करते हुए फिल्म की हीरोइन गाती है- मैं तुझसे मिलने आई मंदिर जाने के बहाने ! एक बड़ा पुराना गीत है- तेरे पूजन को भगवान, बनाऊं मंदिर आलीशान ! इस गाने में हिंदी और उर्दू का मेल है. भगवान शब्द हिंदी का है और आलीशान शब्द उर्दू का है जिसका अर्थ भव्य होता है. फिल्म 'अमर' का गीत था इंसाफ का मंदिर है ये, भगवान का घर है, कहना है जो कह दे, तुझे किस बात का डर है! राजकुमार, मीनाकुमारी और राजेंद्रकुमार की फिल्म 'दिल एक मंदिर' का गीत था दिल एक मंदिर है, प्यार की जिसमें होती है पूजा, ये ईश्वर का घर है.' हेमंतकुमार की आवाज में एक अन्य फिल्मी गीत है छुपा लो यूं दिल में प्यार मेरा कि जैसे मंदिर में लौ दीये की!'

पड़ोसी ने कहा- 'निशानेबाज, भक्तजन मंदिर की चौखट पर अपना माथा रगडते हैं. चंदा चोरों को अदालत की चौखट पर जाना पड़ेगा. शायद छुटभैयों को सजा होगी और बड़े मगरमच्छ बच जाएंगे!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12306 -डॉ. सागर खादीवाला

बाएं से दाएं

1. बीज बोना, किसी बात का या कार्य को प्रारंभ करना 4. शतरंज के खेल में कोई मोहरा ऐसी जगह रखना जहां से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो 6. धारण करने वाला, रक्षक, पकड़ने की क्रिया या भाव7. आकाश, वस्त्र 8. पानी में उत्पन्न होने वाला एक प्रसिद्ध पौधा या फूल, पद्म 10.आनंद, सुख स्वाद 12. वह स्थान जहां दुर्घटना में मृत व्यक्तियों के शव को चीर-फाड़कर उनकी मृत्यु का कारण ज्ञात किया जाता है 14. मुर्दा लपेटने का वस्त्र 16. तिब्बत के बौद्धों का धर्माचार्य तथा शासक 17. पास होना, निकलना, खोई हुई वस्तु का कहीं से निकलना (उर्दू) 19. एक शब्द जिसका प्रयोग हवि देते समय होता है, जो जलकर राख हो गया हो20. राजा की पत्नी 21. टूटे या गिरे हुए मकान की ईंटें-पत्थर आदि या उनका ढेर 24. पान बेचने वाला, तमोली

ऊपर से नीचे

1. औरंगाबाद स्थित एक ऐतिहासिक इमारत जो ताजमहल जैसी दिखती है 2. रोकने वाला 3. जिससे आगे या और अधिक कुछ न हो, सर्व श्रेष्ठ 4. रात्रि, रात 5. युद्ध के समय हिंदू सैनिकों द्वारा किया जाने वाला उद्घोष 9. लचकदार 11. केसर के रंग का 13. लक्ष्मी, पत्नी 15. आर्द्र, गीला 18. बलपूर्वक दबाना 22. तीतर की जाति का एक छोटा पक्षी, अन्न का दाना जो भूनने से फूल गया हो 23. वाटिका, फुलवारी

Solution 12305

च	म	शो	ध	ना	ल	य	
श्म		भ	र	म		ज	ल
दी	वा	ना		क	र	मा	ला
द	र	स	ना		ज	न	ना
		म	ज	बू	त		
अ	न	र्थ		झ	प	ट	ना
प	र		श्या		ट	म	क
च	म	च	मा	ना		की	ड़ा

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में भवन संबंधी विवाद का सामना करना होगा. व्यर्थ के वाद विवाद से मतभेद बढ़ेगा. वर्ष के मध्य में रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी. व्यवसाय में प्रगति होगी. राज्य सम्मान एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी. साहसिक पराक्रम बना रहेगा. वर्ष के अन्त में सामाजिक सक्रियता बनी रहेगी. मित्रों का सहयोग रहेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को व्यापार में प्रगति होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को वाहन का सुख मिलेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ वाद विवाद एवं मतभेद हो सकता है. सिंह राशि के व्यक्तियों को राज्य सम्मान की प्राप्ति होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को रचनात्मक कार्यों में सफलता प्राप्त होगी.धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आर्थिक एवं व्यापारिक लाभ का योग है. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अपने कार्यों को करने के प्रति समर्पित रहना होगा. सामाजिक सक्रियता बनी रहेगी. मित्रों का सहयोग रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, विनोदी, चतुर, चंचल तथा स्वविवेकी होगा, इनकी शिक्षा उत्तम रहेगी. ये शीघ्र ही किसी से भी मित्रता कर लेते हैं. माता पिता के प्रति इनका झुकाव रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

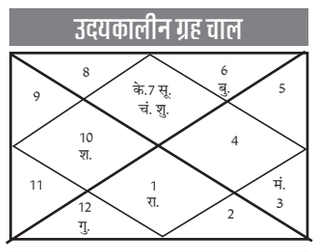

पंचांग

रा.मि. 11 संवत् 2083 आषाढ कृष्ण द्वितीया गुरूवासरे दिन 7/57, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे दिन 8/43, वैधृति योगे दिन 4/33, कौलव करणे सू.उ. 5/13, सू.अ. 6/47, चन्द्रचार मकर, शु.रा. 10, 12, 1, 4, 5, 8 अ.रा. 11, 2, 3, 6, 7, 9 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

आषाढ कृष्ण द्वितीया को उत्तराषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से गुड, खांड, जौ, गेहूं, चना, रूई कपास, चांदी, सोना के भाव में मंदी होगी. जीरा, धनियां के भाव पूर्ववत् रहेंगे. वायदा विचारा आज 11 बजकर 10 मिनिट से 20 मिनिट रूख पर व्यापार करना लाभप्रद रहेगा. भाग्यांक 3116 है.

मेष- जीवनसाथी के साथ मतभेद रह सकते हैं, प्रापर्टी संबंधी विवाद के समाधान की संभावना है. आजीविका के प्रयासों में उन्नति होगी, साहस बना रहेगा.

वृषभ- पारिवारिक अपेक्षाओं को पूरा करने में नाकाम रहेंगे, जिससे परिजन नाराज हो सकते हैं. मित्रता आपके लिये हितकर रहेगी, यात्रा में यथेष्ठ सावधानी रखें.

मिथुन- कार्यक्षेत्र में अप्रत्याशित सफलता के आसार हैं, हाथ में लिया गया काम पूरा होगा. खानपान पर नियंत्रण रखकर कार्य करें, उदर विकार से कष्ट हो सकता है.

कर्क- सामाजिक कार्यक्रमों में आपकी उपस्थिति नया उत्साह भर देगी, नये की शुरूआत हो सकती है, आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि का योग है, संयम रखकर कार्य करें.

सिंह- बेहतर भविष्य के लिये आपको कुछ कठोर फैसले लेने पड़ सकते हैं, स्वास्थ्य का ध्यान रखें. अतिथि वृषभमन होगा, लाभ तथा यश प्राप्त होने का प्रबल योग है.

कन्या- खानपान में लापरवाही के चलते स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, नौकरी में तरक्की का योग है. संतान कार्यों में तथा लेखन सृजन के कार्यों में सफलता मिलेगी.

तुला- अधिकारियों से काम के संबंध में उचित आश्वासन मिलेगा, शीघ्रता में कोई निर्णय न लें. नवीन निर्माण कार्यों में उन्नति होगी, संयम से कार्य करना हितकर रहेगा.

वृश्चिक- आप दूसरों के सहयोग के लिये हमेशा तैयार रहेंगे, साहस, पराक्रम एवं कामकाज के प्रति उत्साह रहेगा. सामाजिक कार्यों में रूचि रहेगी. मित्रता उपयोगी रहेगी.

धनु- प्रस्तावित योजनाएं बाधित हो सकती है, सुनी बातों पर कोई निर्णय न लें. मित्रों एवं कुटुम्बियों के सहयोग से आर्थिक समस्या दूर होगी. सतर्कता रखें.

मकर- नए संपर्कों में सावधानी बरतें, लोग विश्वास में लेकर धोखा दे सकते हैं. मांगलिक कार्यों पर खर्च होगा, मनोरंजन, आमोद प्रमोद के साधनों में वृद्धि होगी.

कुम्भ- घरेलू उलझनें परेशान करेंगी, नकारात्मक सोच से बना बनाया काम बिगड़ सकता है. विशेष श्रम एवं प्रयास करने से सफलता प्राप्त होगी. संयम रखें.

मीन- आप रिश्तों को सहज रखने की कोशिश करेंगे, जिसका कुछ लोग अनुचित लाभ उठाने का प्रयास करेंगे. सोचे हुये कार्यों में सफलता प्रापत होगी.

SUDOKU 7438

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7437

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7